मनुष्यता (मैथिलीशरण गुप्त)

पाठ का परिचय

अपने एक गुण के कारण मनुष्य संसार के अन्य प्राणियों से भिन्न है। वह गुण है–'मनुष्यता'। इस गुण के कारण मनुष्य केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी जीता-मरता है। मनुष्यता में अनेक सद्गुणों का समाहार है; जैसे–परोपकार, उदारता, दान, दया, सहानुभूति, विश्वबंधुत्व, प्रेम आदि। प्रस्तुत पाठ में इन गुणों को अपनाकर मनुष्य बनने की प्रेरणा दी गई है। इनमें से किसी एक गुण को धारण करके भी मनुष्य संसार में अमर हो जाता है। इन गुणों से रहित मनुष्य को कवि मनुष्य मानने को तैयार नहीं है।

काव्यांशों का भावार्थ

मनुष्यता

1. विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

भावार्थ–कवि कहता है कि हे मनुष्यो! यह अच्छी प्रकार विचार कर लो कि मानव-जीवन नश्वर है; अतः मृत्यु निश्चित है। यदि मृत्यु निश्चित है तो तुम्हें उससे डरना नहीं चाहिए, बल्कि ऐसी गौरवशाली मृत्यु प्राप्त करनी चाहिए कि मरने के बाद भी सब याद करें। ऐसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा जाता है। यदि तुम्हें ऐसी गौरवशाली सुमृत्यु प्राप्त न हुई तो तुम्हारा जीना-मरना व्यर्थ है। सुमृत्यु परोपकार से प्राप्त होती है; क्योंकि जो अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए जीता है, वह मरकर भी नहीं मरता। परोपकारी अमर हो जाता है। केवल अपने लिए ही जीना तो पशुओं का स्वभाव है। मनुष्य तो वही है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है।

2. उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

भावार्थ–उदारता को मनुष्यता का महत्त्वपूर्ण गुण मानते हुए गुप्त जी कहते हैं कि उदार व्यक्तियों की कथाएँ ही पुस्तकों में छपती हैं और लोगों की वाणी ही उनका बखान करती है। उदार व्यक्ति के जन्म से यह पृथ्वी धन्य हो जाती है। उसका यश सदैव अमर रहता है और यह सारा संसार उसकी पूजा करता है। इसका कारण यह है कि उदार व्यक्ति अपने उदारतापूर्ण कार्यों से संसार में विश्वबंधुत्व और मित्रता की भावना को भर देता है। ऐसा उदार व्यक्ति ही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है; क्योंकि मनुष्य वही है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है।

3. क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

भावार्थ–परोपकारियों और त्यागियों का उदाहरण देते हुए गुप्त जी कहते हैं कि भूख से व्याकुल राजा रंतिदेव ने अपने हाथ पर रखा भोजन का थाल घर आए भिक्षुक को दे दिया और स्वयं भूखे रहे। महर्षि दधीचि ने जन-कल्याण के लिए अपनी हड्डियाँ देवताओं को दे दीं। राजा उशीनर ने एक छोटे-से पक्षी कबूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर का मांस काटकर दे दिया था। दानवीर कर्ण ने अपना प्राणरक्षक कवच भी माँगने वाले इंद्र को दान कर दिया। इन सब परोपकारी-जनों को पता था कि यह शरीर नश्वर है, इसलिए इसे परोपकार में लगा देना चाहिए। कवि कहते हैं कि यह शरीर नश्वर है, इसलिए इसे परकल्याण में लगाते हुए डरना नहीं चाहिए; क्योंकि मनुष्य तो वही है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है।

4. सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?
अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

भावार्थ–मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि सहानुभूति अर्थात् करुणा भी मनुष्यता का आवश्यक गुण है। यह गुण मनुष्य की महान पूँजी है। करुणा एक ऐसा गुण है, जिसके द्वारा सारा संसार स्वयं ही वशीभूत हो जाता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि बुद्ध का अन्य धर्मों ने जो विरोध किया था, वह उनकी करुणा की धारा में बह गया था। अपने दया-भाव से उन्होंने सारे संसार को अपना अनुयायी बना लिया था। कवि कहता है कि यह भाव केवल परोपकारी-जनों के हृदय में ही उत्पन्न होता है अर्थात् जो दूसरों की भलाई करता है, वही उदार और दयालु होता है। वास्तव में वही मनुष्य है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है।

5. रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

भावार्थ–गुप्त जी कहते हैं कि धन की उपलब्धि बहुत तुच्छ है। मनुष्य को भूलकर भी धन का घमंड नहीं करना चाहिए। आप किसी की रक्षा करने के कारण उसके स्वामी हैं, शक्ति का ऐसा घमंड हमें अपने हृदय में नहीं करना चाहिए; क्योंकि जब तीनों लोकों के स्वामी भगवान सबके रक्षक हैं तो कोई भला अनाथ कैसे हो सकता है? अर्थात् उनके रहते संसार में कोई अनाथ अर्थात् असुरक्षित नहीं है। वे दीन-दुखियों

के सहायक बहुत दयालु और सर्व समर्थ हैं। वह मनुष्य भाग्यहीन है, जो हर समय धन-प्राप्ति के लिए व्याकुल रहता है। मनुष्य को धन के लिए नहीं, बल्कि परोपकार आदि मानवीय गुणों के लिए अधीर होना चाहिए; क्योंकि वही मनुष्य है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है।

6. अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

भावार्थ–गुप्त जी कहते हैं कि अनंत आकाश में असंख्य देवता तुम्हारी सहायता और सुख-समृद्धि के लिए हाथ बढ़ाए खड़े हैं, लेकिन इसके लिए तुम्हें मनुष्यता को धारण करना होगा। तुम एक-दूसरे का सहारा बनकर उठो और उन्नति के पथ पर आगे बढ़ो। कवि संसार के सभी लोगों का आह्वान करते हुए कहते हैं कि अपने आचरण को पवित्र बनाकर अमरत्व (देवत्व) को प्राप्त करो। कहने का आशय यह है कि तुम अमानवीय भावों को त्यागकर मनुष्यता को धारण करो और देवतुल्य बन जाओ। तुम्हारा जीवन ऐसा नहीं होना चाहिए कि एक-दूसरे के काम न आए; क्योंकि मनुष्य तो वास्तव में वही है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है।

7. 'मनुष्य मात्र बंधु है' यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

भावार्थ–गुप्त जी कहते हैं कि मनुष्य का सबसे बड़ा विवेक यही है कि वह संसार के सभी मनुष्यों को अपना भाई समझे। वास्तव में सभी मनुष्य परस्पर बंधु हैं, यह बात सत्य भी है; क्योंकि पुराणों में परमात्मा को सभी मनुष्यों का एकमात्र पिता बताया गया है। वह स्वयंभू है, वही एकमात्र पुरुष है और वही सबका जन्मदाता है। यह तो ठीक है कि कर्म के फलानुसार सब भिन्न-भिन्न दिखाई देते हैं; क्योंकि जो जैसे कर्म करता है, उसे वैसा ही जन्म मिल जाता है, परंतु आंतरिक दृष्टि से सब एक ही हैं। वेद इस आंतरिक एकता के प्रमाण हैं। इसलिए यह सबसे बड़ा पाप है कि एक भाई अपने दूसरे भाई की पीड़ा को न हरे; क्योंकि वास्तव में मनुष्य वही है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है।

8. चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

भावार्थ–गुप्त जी कहते हैं कि तुम सब सामने आने वाली विपत्तियों और विघ्न-बाधाओं को एक ओर ढकेलते हुए प्रसन्नतापूर्वक हँसी-खुशी से अपने-अपने अभीष्ट मार्ग पर बढ़ते चलो। सभी पंथ, संप्रदाय और धर्म इस बात के प्रति सतर्क (सावधान) रहें कि भले ही संसार में कितने भी धर्म, संप्रदाय हों, लेकिन सबका निर्विवाद मार्ग एक ही है अर्थात् सब ईश्वर की ओर ही जाते हैं। अतः तुम्हें ध्यान रखना है कि विभिन्न मार्गों पर चलते हुए भी तुम्हारा परस्पर हेलमेल (मित्रभाव) कम न हो और आपस में भेदभाव न बढ़े। मनुष्य की समर्थता तभी है, जब वह स्वयं भी पार उतरे और दूसरों को भी उतारे; क्योंकि वास्तव में मनुष्य वही है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है।

शब्दार्थ

मर्त्य = मरणशील। **वृथा** = बेकार। **धरा** = धरती। **सजीव** = जीवित। **अखंड** = जिसके टुकड़े न किए जा सकें। **असीम** = जिसकी सीमा न हो। **क्षुधार्त** = भूख से परेशान। **करस्थ** = हाथ में स्थित। **परार्थ** = दूसरों के लिए। **अस्थिजाल** = हड्डियों का समूह। **उशीनर क्षितीश** = गंधार देश के राजा शिवि। **सहर्ष** = खुशी से। **शरीर चर्म** = शरीर का कवच। **महाविभूति** = सबसे बड़ी संपत्ति। **विरुद्धवाद** = खिलाफ होना। **मदांध** = घमंड में अंधा। **तुच्छ** = बेकार। **सनाथ** = जिसके पास अपनों का साथ हो। **अनाथ** = जिसका कोई न हो। **चित्त** = मन। **त्रिलोकनाथ** = ईश्वर। **अधीर**= उतावलापन। **अनंत** = जिसका कोई अंत न हो। **अंतरिक्ष** = आकाश। **समक्ष** = सामने। **परस्परावलंब** = एक दूसरे का सहारा। **अमर्त्य-अंक** = देवता की गोद। **अपंक** = कलंकरहित। **विवेक** = समझ। **स्वयंभू** = परमात्मा, स्वयं उत्पन्न होने वाला। **अंतरैक्य** = आत्मा की एकता, अंतःकरण की एकता। **प्रमाणभूत** = साक्षी। **व्यथा** = दुःख, कष्ट। **अभीष्ट** = इच्छित। **अतर्क** = तर्क से परे। **सतर्क** = सावधान।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए*–

(1) विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

1. कवि के अनुसार मनुष्य कौन है–
(क) जो अपने लिए जीता है
(ख) जो अपने परिवार के लिए मरता है
(ग) जो मनुष्य के लिए जीता-मरता है
(घ) जो किसी के लिए कुछ नहीं करता।

2. पशु-प्रवृत्ति क्या है–
(क) दूसरों के लिए जीना-मरना (ख) हमेशा परोपकार करना
(ग) जंगलों में घूमना-फिरना (घ) केवल अपने लिए ही जीना।

3. कौन अमर हो जाता है–
(क) जो दूसरों के लिए जीता-मरता है
(ख) जो केवल अपने लिए जीता है
(ग) जो कठोर तपस्या करता है
(घ) जो पशुओं जैसा जीवन जीता है।

4. कैसी मृत्यु सुमृत्यु होती है–
(क) जिसमें कष्ट होता है
(ख) जिसमें कष्ट नहीं होता
(ग) जिसमें मरने के बाद भी लोग याद करते हैं
(घ) जिसमें मरने के बाद कोई याद नहीं करता।

5. कवि के अनुसार किसे मृत्यु से नहीं डरना चाहिए–
(क) मनुष्य को (ख) पशु को
(ग) पक्षी को (घ) इनमें कोई नहीं।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (क)।

(2) क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

1. **देह कैसी है–**
   (क) अनादि है (ख) अनित्य है
   (ग) अज़र है (घ) नीरोग है।
2. **भूख से पीड़ित रंतिदेव ने क्या किया था–**
   (क) अपना भोजन खा लिया
   (ख) दूसरों का भोजन छीन लिया
   (ग) अपने भोजन का थाल दूसरों को दे दिया
   (घ) जल्दी से भोजन तैयार किया।
3. **महर्षि दधीचि ने परोपकार के लिए क्या किया–**
   (क) बहुत दिनों तक तपस्या की
   (ख) बहुत-से पेड़ लगाए
   (ग) औषधियों का निर्माण किया
   (घ) अपनी अस्थियाँ दान कर दीं।
4. **अपने शरीर का मांस किसने दान कर दिया था–**
   (क) कर्ण ने (ख) राजा उशीनर ने
   (ग) दधीचि ने (घ) रंतिदेव ने।
5. **अपना शरीर-चर्म किसने दिया–**
   (क) अर्जुन ने (ख) दधीचि ने
   (ग) कर्ण ने (घ) रंतिदेव ने।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(3) रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

1. **कवि ने धन को कैसा बताया है–**
   (क) महत्त्वपूर्ण (ख) अनावश्यक
   (ग) आवश्यक (घ) तुच्छ।
2. **संसार में कोई भी अनाथ नहीं है; क्योंकि–**
   (क) सबके माता-पिता हैं (ख) सबके पास धन है
   (ग) सबके साथ त्रिलोकनाथ हैं (घ) सब स्वतंत्र हैं।
3. **अतीव भाग्यहीन कौन है–**
   (क) जो धनहीन है
   (ख) जो निडर रहता है
   (ग) जो अधीरता का भाव धारण करता है
   (घ) जो धैर्यवान है।
4. **विशाल हाथ किसके हैं–**
   (क) राजा के (ख) ईश्वर के
   (ग) राक्षसों के (घ) देवताओं के।
5. **स्वयं को क्या जानकर गर्व नहीं करना चाहिए–**
   (क) बलवान (ख) सनाथ
   (ग) धनवान (घ) विद्वान।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (ख)।

(4) 'मनुष्य मात्र बंधु है' यह बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

1. **सबसे बड़ा विवेक क्या है–**
   (क) मनुष्य मात्र को अपना बंधु मानना
   (ख) केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करना
   (ग) अच्छे-बुरे की पहचान करना
   (घ) किसी से कोई संबंध न रखना।
2. **सब मनुष्य परस्पर बंधु है; क्योंकि–**
   (क) सब एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं
   (ख) सब एक साथ रहते हैं
   (ग) सब एक ही परमपिता परमेश्वर की संतान हैं
   (घ) सबको एक ही माता ने जन्म दिया है।
3. **मनुष्यों के बाह्य भेद का क्या कारण है–**
   (क) जन्म-स्थान की भिन्नता (ख) जन्म के समय की भिन्नता
   (ग) धर्म की भिन्नता (घ) कर्म-फल की भिन्नता।
4. **सबसे बड़ा अनर्थ क्या है–**
   (क) जीवों की हत्या करना
   (ख) एक भाई द्वारा दूसरे भाई की व्यथा न हरना
   (ग) झूठ बोलना
   (घ) कर्तव्य का पालन न करना।
5. **कवि ने स्वयंभू किसे कहा है–**
   (क) स्वयं को (ख) पाठक को
   (ग) ईश्वर को (घ) पिता को।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **'मनुष्यता' कविता के कवि कौन हैं–**
   (क) रामधारी सिंह 'दिनकर' (ख) मैथिलीशरण गुप्त
   (ग) सुमित्रानंदन पंत (घ) जयशंकर प्रसाद।
2. **मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कब हुआ–**
   (क) सन् 1880 में (ख) सन् 1882 में
   (ग) सन् 1885 में (घ) सन् 1886 में।
3. **गुप्त जी की प्रमुख रचना है–**
   (क) साकेत (ख) यशोधरा
   (ग) जयद्रथ वध (घ) ये सभी।
4. **गुप्त जी किस रूप में विख्यात हुए–**
   (क) राष्ट्रकवि (ख) प्रकृति-प्रेमी कवि
   (ग) श्रृंगारिक कवि (घ) इनमें से कोई नहीं।
5. **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और उपयुक्त कथन चुनिए–** ***(CBSE SQP 2023-24)***
   (क) पशु प्रवृत्ति को बनाए रखना ही सुमृत्यु है
   (ख) सच्ची मनुष्यता ही सुमृत्यु के समान है
   (ग) सुमृत्यु वही है जिसमें व्यक्ति को कष्ट न हो
   (घ) सुमृत्यु वही है जिसे मरने के बाद भी लोग याद करें।

6. **कवि मनुष्य को किससे न डरने के लिए कहता है–**
   (क) सिंह से (ख) शत्रु से
   (ग) मृत्यु से (घ) सर्प से।
7. **कवि के अनुसार मनुष्यता किसमें है–**
   (क) जो अपने लिए मरता है
   (ख) जो मृत्यु से डरता है
   (ग) जो ईश्वर को भजता है
   (घ) जो मनुष्य के लिए मरता है।
8. **राजा उशीनर ने क्या दान किया–**
   (क) सोना (ख) चाँदी
   (ग) अपने शरीर का मांस (घ) वस्त्र।
9. **शरीर-चर्म किसने सहर्ष दान कर दिया–**
   (क) अर्जुन ने (ख) हरिश्चंद्र ने
   (ग) कर्ण ने (घ) रविदेव ने।
10. **सरस्वती जी किसकी कथा बखानती हैं–**
   (क) कवि की (ख) लेखक की
   (ग) राजा की (घ) उदार व्यक्ति की।
11. **समस्त सृष्टि किसे पूजती है–**
   (क) राजा को (ख) बलवान को
   (ग) उदार को (घ) धनवान को।
12. **कवि ने महाविभूति किसे कहा है–**
   (क) धन को (ख) सहानुभूति को
   (ग) बल को (घ) तपस्या को।
13. **बुद्ध का विरोध किसमें बह गया–**
   (क) नदी के प्रवाह में (ख) समुद्र में
   (ग) दया-प्रवाह में (घ) घृणा के प्रवाह में।
14. **कवि के अनुसार उदार कौन है–**
   (क) जो परोपकार करे (ख) जो प्रेम करे
   (ग) जो अधिक दान करे (घ) जो तप करे।
15. **अनंत अंतरिक्ष में कौन खड़ा है–**
   (क) ईश्वर (ख) सूर्य
   (ग) अनंत देवता (घ) बहुत-से दैत्य।
16. **कवि किसलिए मनुष्य का आह्वान करता है–**
   (क) एक-दूसरे का सहारा लेकर उठने के लिए
   (ख) आगे बढ़ने के लिए
   (ग) देवों की गोद में आरूढ़ होने के लिए
   (घ) उपर्युक्त सभी के लिए।
17. **कवि के अनुसार कौन-सी चीज़ कम नहीं होनी चाहिए–**
   (क) धन (ख) बल
   (ग) हेलमेल (घ) वैरभाव।
18. **समर्थ कौन है–**
   (क) जो खूब धन अर्जित करता है
   (ख) जो सब पर विजय प्राप्त करता है
   (ग) जो दान करता है
   (घ) जो अपने साथ दूसरों को भी पार उतारता है।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (ग) **7.** (घ) **8.** (ग) **9.** (ग) **10.** (घ) **11.** (ग) **12.** (ख) **13.** (ग) **14.** (क) **15.** (ग) **16.** (घ) **17.** (ग) **18.** (घ)

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है? ***(CBSE 2018, 20)***

***अथवा* 'मनुष्यता' कविता का प्रतिपाद्य लगभग 100 शब्दों में लिखिए।**

उत्तर : इस कविता के माध्यम से कवि मैथिलीशरण गुप्त मनुष्य को परोपकारी जीवन जीने का संदेश देना चाहते हैं। वे बताना चाहते हैं कि मनुष्य तो वही है, जो दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है। स्वार्थी मनुष्य तो पशु के समान होता है। वे मनुष्य को स्वार्थ, भेदभाव, संकीर्णताओं से मुक्त होकर मानवता, एकता, सहानुभूति, दया, करुणा, उदारता तथा बंधुत्व आदि गुणों को धारण करने का संदेश देना चाहते हैं। वे संदेश देना चाहते हैं कि मनुष्य को परस्पर एक-दूसरे का सहारा बनकर हेलमेल से आगे बढ़ना चाहिए तथा अपने साथ-साथ दूसरों का भी उद्धार करना चाहिए।

प्रश्न 2 : 'मनुष्यता' कविता के आधार पर लिखिए कि कैसा जीवन जीने वाले लोग मरकर अमर हो जाते हैं? ***(CBSE 2023)***

उत्तर : 'मनुष्यता' कविता के अनुसार जो अपने लिए नहीं, अपितु दूसरों के लिए जीते हैं, वे लोग मरकर भी अमर हो जाते हैं। उनकी मृत्यु सुमृत्यु होती है। संसार मरने के बाद भी उन्हें सदैव याद करता है। इस प्रकार वे यश के रूप में सदैव अमर रहते हैं।

प्रश्न 3 : कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है और क्यों? ***(CBSE 2022 Term 2; CBSE 2017)***

उत्तर : कवि ने मनुष्यता को धारण करने वाले उस व्यक्ति की मृत्यु को सुमृत्यु कहा है, जिसका जीना-मरना परोपकार के लिए होता है। ऐसे व्यक्ति को मरने के बाद भी लोग याद करते हैं। कवि के अनुसार सुमृत्यु वही है, जिसमें मरणोपरांत भी व्यक्ति को याद किया जाता है।

प्रश्न 4 : कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता' के लिए क्या संदेश दिया है?

उत्तर : महर्षि दधीचि ने संसार के कल्याण हेतु अपनी हड्डियाँ देवताओं को दान दे दी थीं तथा कर्ण ने याचक बने इंद्र को अपना रक्षाकवच दान में दे दिया था। इन व्यक्तियों का उदाहरण देकर कवि यह संदेश देना चाहता है कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है। मनुष्य का शरीर नश्वर है। मृत्यु के द्वारा नष्ट किए जाने से पहले ही इसे परोपकार में लगा देना चाहिए। दधीचि और कर्ण आदि महान पुरुषों ने इस तथ्य को समझ लिया था, इसलिए उन्होंने अपना जीवन परोपकार में लगा दिया।

प्रश्न 5 : 'मनुष्यता' कविता में भाग्यहीन किसे और क्यों कहा गया है? अपने शब्दों में लिखिए। ***(CBSE 2023)***

उत्तर : मनुष्यता कविता में भाग्यहीन उसे कहा गया है, जो स्वयं को अनाथ समझकर व्याकुल हो जाता है। मनुष्य को स्वयं को अनाथ नहीं समझना चाहिए, क्योंकि भगवान त्रिलोकीनाथ सबके साथ हैं। वे दीनबंधु और बड़े दयालु हैं। उनके हाथ बहुत लंबे हैं, वे सबकी सहायता करते हैं; अतः भगवान के होते हुए जो स्वयं को अनाथ समझता है, वह भाग्यहीन है।

प्रश्न 6 : 'मनुष्यता' कविता में 'अभीष्ट मार्ग' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर : अभीष्ट मार्ग से तात्पर्य मनुष्य के लिए उचित कर्तव्य-मार्ग पर चलने से है। संसार में अनेक धर्म और पंथ हैं और बहुत-से काम-धंधे हैं। लेकिन कोई भी धर्म और कर्तव्य दूसरों को सताने की अनुमति नहीं देता। मनुष्य को अपनी इच्छानुसार धर्म या पंथ अपनाने तथा अपनी इच्छानुसार कार्य करने की स्वतंत्रता है। मगर उसे यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि उसके द्वारा किसी दूसरे को कोई कष्ट न हो। यही मनुष्यता है और इसका पालन करना ही उसका अभीष्ट मार्ग है।

प्रश्न 7 : मैथिलीशरण गुप्त ने 'मनुष्यता' कविता में किन-किन उदाहरणों से परोपकार का संदेश दिया है?

उत्तर : गुप्त जी ने निम्नलिखित उदाहरणों से परोपकार का संदेश दिया है–

(i) भूख से व्याकुल रंतिदेव ने अपने भोजन का थाल किसी भूखे व्यक्ति को दे दिया था।

(ii) महर्षि दधीचि ने देवताओं के कल्याण के लिए अपनी हड्डियाँ दे दी थीं।

(iii) राजा उशीनर ने कबूतर के प्राण बचाने के लिए भूखे बाज़ को अपने शरीर का मांस काटकर दे दिया था।

(iv) कर्ण ने इंद्र के माँगने पर अपने कवच-कुंडल दान में दे दिए थे।

प्रश्न 8 : बुद्ध का विरुद्धवाद क्या था? वह कैसे शांत हुआ?

उत्तर : बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। उन्होंने अनात्मवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन किया, जिसका अन्य धर्मों और मतों ने घोर विरोध किया। बुद्ध के धर्म का मूलतत्त्व करुणा था। बुद्ध को बहुत प्रताड़ना का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने अपने करुणा के भाव से सारे विरोध को शांत कर दिया और सारा संसार उनका अनुयायी बन गया।

प्रश्न 9 : परोपकारी व्यक्ति सर्वस्व बलिदान क्यों कर देता है?

उत्तर : एक उदार और परोपकारी व्यक्ति सर्वस्व दूसरों के लिए बलिदान कर देता है, जैसा कि कर्ण और दधीचि आदि ने किया। इसका कारण यह है कि उसे इस बात का ज्ञान होता है कि यह मानव-देह अनित्य है। एक-न-एक दिन यह नष्ट हो जानी है। इसका सबसे अच्छा उपयोग यह है कि इसे दूसरों के कल्याण में लगा दिया जाए। इसलिए वह सर्वस्व बलिदान करते हुए डरता नहीं है।

प्रश्न 10 : कवि ने भाग्यहीन किसे कहा है और क्यों?

उत्तर : कवि ने भाग्यहीन उसे कहा है, जो धन के बिना स्वयं को अनाथ मानता है और धन पाने के लिए व्याकुल रहता है। वह अभागा इसलिए भी है; क्योंकि वह तीनों लोकों के स्वामी भगवान के होते हुए स्वयं को अनाथ समझता है। वह धन जैसी तुच्छ वस्तु से स्वयं को सनाथ करना चाहता है, जबकि धन तो स्वयं ही अनाथ भी है और उसे सुरक्षा की आवश्यकता भी होती है।

प्रश्न 11 : कवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार मनुष्य कब अहंकारी हो जाता है और क्यों?

उत्तर : मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार मनुष्य धन-संपत्ति और शक्ति पाकर अहंकारी बन जाता है; क्योंकि धन और शक्ति से वह स्वयं को दूसरों का स्वामी और रक्षक समझने लगता है। धन एक तुच्छ वस्तु है और संसार का एकमात्र स्वामी और रक्षक भगवान है। जिसके रक्षक भगवान हैं, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। फिर भी व्यक्ति धन और शक्ति पाकर अहंकारी हो जाता है।

प्रश्न 12 : कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए क्या संदेश दिया है?

उत्तर : दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर कवि मनुष्यता के लिए यह संदेश देना चाहता है कि जिस प्रकार इन महान व्यक्तियों ने परोपकार के लिए अपना शरीर बलिदान कर दिया, उसी प्रकार मनुष्य को दूसरे मनुष्यों के लिए अपने आपको बलिदान करते हुए डरना नहीं चाहिए; क्योंकि यह देह अनित्य (नश्वर) है।

प्रश्न 13 : 'मनुष्यता' कविता के आधार पर किन्हीं तीन मानवीय गुणों के बारे में लिखिए।

उत्तर : (i) परोपकार मनुष्यता का प्रमुख गुण है। परोपकारी व्यक्ति अपना सारा जीवन दूसरों के कल्याण में लगा देता है। वह अंत में सुमृत्यु को प्राप्त होता है और मरकर भी अमर हो जाता है।

(ii) उदारता मनुष्यता का दूसरा महत्त्वपूर्ण गुण है। उदार व्यक्ति संसार में विश्वबंधुत्व और एकता की भावना को भर देता है। उसकी कीर्ति युगों तक गूँजती रहती है।

(iii) दानशीलता और त्याग भी मनुष्यता के महत्त्वपूर्ण गुण हैं। जो व्यक्ति इन गुणों को ध्यान में रखकर जीवनयापन करता है, वह मानवता के लिए सर्वस्व बलिदान कर देता है। कर्ण, दधीचि आदि इसके उदाहरण हैं।

प्रश्न 14 : मैथिलीशरण गुप्त ने गर्वरहित जीवन बिताने के लिए क्या तर्क दिया है? ***(CBSE 2015)***

उत्तर : कवि गुप्त जी ने मनुष्य को गर्वरहित जीवन बिताने का संदेश दिया है। उनके विचार से धन बहुत तुच्छ है। उसका घमंड नहीं करना चाहिए और उसके कारण स्वयं को सनाथ नहीं समझना चाहिए। संसार में सनाथ तो सभी हैं; क्योंकि सबके सिर पर त्रिलोकीनाथ भगवान का हाथ है। उनके रहते कोई अनाथ नहीं हो सकता।

प्रश्न 15 : 'मनुष्यता' कविता में परस्पर सहयोग से क्या करने की प्रेरणा दी गई है?

उत्तर : कवि ने परस्पर सहयोग से उन्नति करने और जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। वह कहता है कि तुम्हें ऐसी जीवन-शैली नहीं अपनानी चाहिए, जिसमें कोई किसी के काम नहीं आता। ईर्ष्या और द्वेष के मैल से रहित पवित्र भाव से एक-दूसरे को सहारा देते हुए इस प्रकार आगे बढ़ो कि तुम्हारा जीवन देवताओं के समान परोपकारी बन जाए।

प्रश्न 16 : उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : उदार व्यक्ति वह होता है, जो अपने उदारता के गुण से समस्त संसार में समता, एकता और विश्वबंधुत्व की भावना को भर देता है। लोग उसकी कथाएँ गाते हैं, संसार उसे पूजता है और उसकी कीर्ति हमेशा कूजती रहती है। वह मरकर भी अमर हो जाता है।

प्रश्न 17 : कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?

अथवा **'मनुष्यता' कविता में कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?** ***(CBSE 2017)***

अथवा **'मनुष्यता' कविता में कवि ने सबको साथ लेकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है? इससे समाज को क्या लाभ है? स्पष्ट कीजिए।** ***(CBSE 2017)***

उत्तर : कवि ने एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है; क्योंकि भाईचारा मनुष्यता का गुण है। सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान हैं, इसलिए सबको भाइयों की तरह एक होकर चलना चाहिए। एकता में बल होता है। एक होकर चलने से मानवता के मार्ग में आने वाली

सभी विघ्न-बाधाएँ नष्ट हो जाएँगी और सभी मनुष्य अपने-अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। संसार में मानवता के विकास का यही एकमात्र उपाय है।

प्रश्न 18 : 'अखंड आत्मभाव जो असीम विश्व में भरे' का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : इस पंक्ति का भाव यह है कि उदार और परोपकारी व्यक्ति समस्त संसार के मनुष्यों के लिए बिना किसी भेदभाव के कल्याणकारी कार्य करता है। वह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओत-प्रोत रहता है। इसलिए संसार को भी विश्वबंधुत्व की भावना से भर देता है। ऐसे उदार व्यक्ति से यह पृथ्वी धन्य हो जाती है और सदैव उसका गुणगान करती है।

प्रश्न 19 : 'मनुष्यता' कविता के आधार पर मनुष्य और पशु में क्या अंतर है?

उत्तर : 'मनुष्यता' कविता के आधार पर जो केवल अपने लिए ही जीता है और आप-आप ही चरता है, वह पशु है। जो परोपकारी है और दूसरों के लिए मरता है, वह मनुष्य है।

प्रश्न 20 : 'मनुष्यता' कविता में अनर्थ किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर : 'मनुष्यता' कविता के अनुसार यदि संसार का एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की पीड़ा को नहीं हरता है तो यह सबसे बड़ा अनर्थ है; क्योंकि एक ईश्वर की संतान होने से संसार के सभी मनुष्य परस्पर भाई हैं। यदि भाई, भाई की पीड़ा नहीं हरता तो यह अनर्थ ही है।

प्रश्न 21 : 'मनुष्यता' कविता में किस धन को श्रेष्ठ और किस धन को तुच्छ माना गया है? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : 'मनुष्यता' कविता में सहानुभूति अर्थात् करुणा को श्रेष्ठ धन माना गया है और उसे महाविभूति कहा गया है। ऐसा इसलिए कहा गया है; क्योंकि जिसके पास करुणारूपी धन होता है, सारा संसार उसके वश में हो जाता है। उसके विरोधी भी उसके सामने नतमस्तक हो जाते हैं। इस धन से मनुष्य में अहंकार नहीं, बल्कि विनम्रता आती है। बुद्ध ने करुणा से सारे संसार को अपना अनुयायी बना लिया था। भौतिक संपत्ति अर्थात् रुपये-पैसे को कवि ने तुच्छ माना है; क्योंकि यह अस्थायी होता है। इस धन के कारण मनुष्य के मन में अहंकार उत्पन्न होता है, जो पाप का मूल है। इस धन को अर्जित करने, व्यय करने तथा सुरक्षित करने में कष्ट का अनुभव होता है। करुणारूपी धन सुख-शांति प्रदान करने वाला होता है। यही कारण है कि बुद्ध ने राजवैभव त्यागकर करुणा को धारण किया।

प्रश्न 22 : 'मनुष्यता' कविता के आधार पर मनुष्यता की परिभाषा बताइए। ***(CBSE 2015, 16)***

अथवा **'मनुष्यता' कविता के आधार पर लिखिए कि कवि ने किन-किन सद्गुणों को मनुष्यता के लिए आवश्यक माना है?** ***(CBSE 2017)***

अथवा **'मनुष्यता' कविता के आधार पर 'मनुष्यता' के गुणों/लक्षणों की चर्चा विस्तारपूर्वक कीजिए।** ***(CBSE 2019)***

उत्तर : मनुष्यता वह गुण है, जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से भिन्न और श्रेष्ठ बनाता है। यह अनेक सद्गुणों का समाहार है। परोपकार, उदारता, त्याग, दानशीलता, सहानुभूति, करुणा, विश्वबंधुत्व, निरभिमानता, सहयोग, धार्मिक सद्भाव आदि मनुष्यता के समाहित गुण हैं। मनुष्यता वह भाव है, जो मनुष्य को दूसरे मनुष्यों के लिए मरना-जीना सिखाता है। यह संपूर्ण संसार को एकता के सूत्र में बाँधता है। इसके कारण मनुष्य अपने शरीर तक का भी बलिदान कर देता है। मनुष्यता के भाव से अभिभूत व्यक्ति राजसुख छोड़कर मानवता के दुख दूर करने के लिए भिक्षुक बन जाता है। रंतिदेव भूख से पीड़ित होते हुए भी अपना भोजन दूसरों को दे देते हैं। राजा उशीनर अपने शरीर का मांस कबूतर की रक्षा के लिए दे देते हैं। दधीचि पर-कल्याण के लिए अपनी हड्डियाँ दान कर देते हैं। मनुष्यता ही वह भाव है, जिसके कारण परस्पर हेलमेल से रहते हुए सभी मनुष्य अपने-अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं।

प्रश्न 23 : 'अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी'–इस पंक्ति के द्वारा कवि क्या समझाना चाहता है?

उत्तर : इस पंक्ति के द्वारा कवि धार्मिक सद्भावना की सीख देना चाहता है। उसका मानना है कि संसार में सभी मनुष्यों का बिना किसी तर्क के निर्विवाद केवल एक ही धर्म है–'मनुष्यता'। अन्य सभी धर्म और संप्रदाय मनुष्यता के धर्म पर आधारित होने चाहिए। उनका एक भी तर्क मानवता के विरुद्ध न हो। सभी धर्म आपसी हेलमेल को बढ़ाएँ, न कि आपसी भेदभाव को। सब लोग मानवता के मार्ग में आने वाली विघ्न-बाधाओं को दूर करते हुए अपने इच्छित पंथ को अपनाकर खुशी से आगे बढ़ते जाएँ। वास्तव में सच्चा पंथ तो वही है, जिसके अनुयायी स्वयं भी पार उतरें और दूसरों को भी पार उतारें। इस प्रकार इस पंक्ति के द्वारा कवि धार्मिक विद्वेष की भावना को संसार से समाप्त करना चाहता है।

प्रश्न 24 : पशु और मनुष्य में क्या अंतर है? किसका जीवन-मरण वृथा है?

उत्तर : पशु वह होता है, जो आप-आप ही चरता है अर्थात् जो केवल अपने लिए ही जीता-मरता है। वह स्वार्थी होता है। उसे दूसरे के सुख-दुख से कुछ भी लेना-देना नहीं होता। वह जीवन में किसी के काम नहीं आता। मनुष्य वह होता है, जो अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरे मनुष्यों के लिए जीता-मरता है। वह परमार्थी होता है। वह अपना सारा जीवन मनुष्यता के लिए समर्पित कर देता है। संसार में जो व्यक्ति केवल अपने लिए जीता-मरता है, कभी परोपकार नहीं करता, उसका जीवन-मरण व्यर्थ है; क्योंकि ऐसे स्वार्थी व्यक्ति को सुमृत्यु प्राप्त नहीं होती। उसे मृत्यु के पश्चात् कोई याद नहीं करता। कविता के अनुसार जिसे सुमृत्यु प्राप्त नहीं होती, उसका जीवन-मरण व्यर्थ होता है।

प्रश्न 25 : 'मनुष्यता' कविता में जिन त्यागी महापुरुषों का उदाहरण दिया गया है, उनमें से किन्हीं दो के विषय में संक्षिप्त रूप से बताइए।

उत्तर : कविता में जिन महापुरुषों का उदाहरण दिया गया है, उनमें से कर्ण एवं उशीनर का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार से है–

कर्ण–महाभारत में वर्णित कर्ण कुंती के पुत्र थे, जो सूर्य के वरदान से उन्हें प्राप्त हुए थे। कर्ण महादानी थे। उन्होंने किसी भी याचक को अपने द्वार से खाली हाथ न लौटाने की प्रतिज्ञा की थी। कर्ण को सूर्य देव से जन्मजात जीवनरक्षक कवच-कुंडल मिले थे। उनके कारण कर्ण को कोई मार नहीं सकता था। महाभारत के युद्ध में अर्जुन और कर्ण प्रतिद्वंद्वी थे। अर्जुन को विजय दिलाने के लिए इंद्र ब्राह्मण का वेश बनाकर कर्ण के पास गए और उनसे कवच-कुंडल माँगे। यह जानते हुए भी कि कवच-कुंडल उनके प्राणरक्षक हैं, कर्ण ने उन्हें ब्राह्मण को दान में दे दिया।

उशीनर–उशीनर राजा शिवि बहुत दानी और शरणागतरक्षक थे। एक बार इंद्रदेव ने उनकी परीक्षा लेने के लिए बाज का रूप धारण किया और अग्निदेव को कबूतर का रूप धारण कराया।

कबूतर रूपधारी अग्निदेव ने शिकारी बाज़ के भय से प्राणरक्षा के लिए उनकी गोद में शरण ली। उशीनर ने कबूतर की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य माना। उधर शिकारी ने कबूतर को अपना भोजन बताया और उसे न देने के बदले में राजा के शरीर का मांस माँगा। उशीनर ने शरणागत कबूतर की रक्षा के लिए सहर्ष अपने शरीर का मांस काटकर शिकारी को दे दिया। उनके शरणागतरक्षक भाव से इंद्र उन पर बहुत प्रसन्न हुए।

प्रश्न 26 : 'कविता के आधार पर 'मनुष्यता' के गुणों/लक्षणों की चर्चा विस्तारपूर्वक कीजिए। ***(CBSE 2019)***

उत्तर : मनुष्यता वह गुण है, जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से भिन्न और श्रेष्ठ बनाता है। यह अनेक सद्‌गुणों का समाहार है। परोपकार, उदारता, त्याग, दानशीलता, सहानुभूति, करुणा, विश्वबंधुत्व, निरभिमानता, सहयोग, धार्मिक सद्‌भाव, आदि मनुष्यता के समाहित गुण हैं। मनुष्यता वह भाव है, जो मनुष्य को दूसरे मनुष्यों के लिए मरना-जीना सिखाता है। यह संपूर्ण संसार को एकता के सूत्र में बाँधता है। इसके कारण मनुष्य अपने शरीर तक का भी बलिदान कर देता है। मनुष्यता के भाव से अभिभूत व्यक्ति राजसुख छोड़कर मानवता के दुख दूर करने के लिए भिक्षुक बन जाता है। रंतिदेव भूख से पीड़ित होते हुए भी अपना भोजन दूसरों को दे देते हैं। राजा उशीनर अपने शरीर का मांस कबूतर की रक्षा के लिए दे देते हैं। दधीचि पर-कल्याण के लिए अपनी हड्डियाँ दान कर देते हैं। मनुष्यता ही वह भाव है, जिसके कारण परस्पर हेलमेल से रहते हुए सभी मनुष्य अपने-अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं।

प्रश्न 27 : दुनियाभर में असहिष्णुता लगभग आम हो गई है। जाति, धर्म रंग और वैचारिक रूप से भिन्न दृष्टिकोण रखने वाले लोगों के प्रति असहिष्णुता की घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। सहिष्णुता की परिभाषा पर विचार करें तो जिस विश्वास और प्रथा को हम पसंद नहीं करते उसमें बाधा डालने की बजाय संयम बरतना ही सहिष्णुता है।

कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने कहा, 'अतर्क' एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।' इस पंक्ति की सार्थकता व वर्तमान समय में इसका औचित्य स्थापित कीजिए।

(CBSE SQP 2021 Term-2)

उत्तर : 'अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।'—गुप्त जी की यह पंक्ति सहिष्णुता और धार्मिक सद्‌भावना की सीख देती है। इस पंक्ति का भाव यह है कि संसार के सभी तर्क-वितर्क करने वाले धर्म और संप्रदाय एक ऐसे पंथ अर्थात् मार्ग को अपनाएँ जिस पर कोई तर्क-वितर्क न किया जा सके। वह मार्ग है—मानवता का मार्ग। यदि सभी धर्म-संप्रदाय मानवता के मार्ग पर चलने की सीख दें तो संसार से असहिष्णुता की भावना पूर्णतः समाप्त हो जाएगी। वर्तमान समय में असहिष्णुता चरम पर है। समस्त संसार में जाति, धर्म और भाषा आदि के नाम पर लोग हर दिन एक-दूसरे का खून बहाते हैं। ऐसे में प्रस्तुत पंक्ति बहुत सार्थक और उचित हैं।